International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8, Issue 7, July - 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत में स्कूल ड्रॉपआउट से सम्बंधित कारकों का अध्यन

विनीता सिंह
शोधकर्ती, राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी. कॉलेज जौनपुर
डॉ. नीता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, राजा श्री कृष्ण दत्त पीजी. कॉलेज जौनपुर

स्कूल छोडना एक वैश्विक समस्या है। भारत में स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या आठ करोड़ से भी ज्यादा है। जो यह बताने के पर्याप्त है कि स्थिति काफी गंभीर है। स्कूल जाने की उम्र वाले बच्चों में सबसे जादा प्रतिशत बच्चे प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल में प्रवेश लेते हैं, इनमें से बहुत सारे शिक्षा पूरी होने से पहले ही स्कूल छोड देते है. जब भी कोई छात्र स्कूल छोड़ता है, शिक्षा मंत्रालय, परिवार और छात्र निवेश पर लाभ को पहचानने में असफल हो जाता है स्कूल छोड़ने वालों के लिए आजीविका और जीविका के लिए विकल्प कम हो जाते है और उसकी समुदाय और देश के कल्याण के योगदान की क्षमता बहुत कम हो जाती है स्कूल छोड़ना कई रूपों में हो सकता है और उसके कारण कई कारक हो सकते हैं, जिनमें छात्रो की विशेषताओं और परिवार की स्थिति से लेकर उनको प्रदान किया जानेवाला स्कूलं और समुदाय का वातावरण सम्मिलित हैं यह इकाई स्कूल छोड़ने की परिभाषा, स्कूल छोड़ने को प्रभावित करने वाले कारकों और स्थितियों को समझने के लिए संरचना कार्य, स्कूल छोड़ने के कारणों पर शोध का सारांश, और स्कूल छोड़ने की रोकथाम के लिए उठाए गए क़दमों की समीक्षा प्रदान करती है।

1. प्रस्तावना

"छात्रो द्वारा विद्यालय छोड़ कर जाना, दुनिया भर की शिक्षा प्रणालियों की एक समस्या है।" जब युवा लोग अपनी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं करते हैं, तो वे अपने परिवारों, समुदायों और अपने देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास में भाग लेने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हो पाते हैं। यह युवा लोगों को अपनी पूरी सामर्थ्य के प्रयोग को असंभव नहीं तो, बहुत कठिन बना देता है।

स्कूल छोड़ने की रोकथाम अंतरराष्ट्रीय शिक्षा की चिंता का तुलनात्मक रूप से एक नया ध्यान केन्द्र है। पिछले दो दशकों में स्कूलों तक अधिक से अधिक बच्चों के पहुंचने पर ध्यान केनद्रित है, पर हाल ही में, शिक्षा की गुणवत्ता पर, जिसमें शैक्षिक उपलब्धि को बेहतर करने के लिए निर्देश, सामग्रियाँ और संसाधन शामिल है पर ध्यान देना शुरू हुआ। हाल ही में यह ध्यान केन्द्र बदलकर स्कूल छोड़ने और एक कक्षा के दोहराव को रोकने के प्रयासों

को शामिल करना भी हो गया है। जहाँ विकासशील देशों में स्कूल छोड़ने के बारे में शेध ने स्कूल छोड़ने वाले छात्रो का वर्णन करने में काम किया है, वहींस्कूल छोड़ कर जाने के बचाव के सफल तरीकों के बारे में बहुत कम जानकारी है।

छात्र अलग–अलग कारणों से स्कूल छोड़ते हैं। स्कूल छोड़ना, उनकी शिक्षा में विभिन्न बिन्दुओं पर भी घटित होता है। भले ही कारण या समय कोई भी हो, स्कूल छोड़ने की लागत, छात्रो, परिवारों, समुदायों और एक देश के लिए बहुत बड़ी है। जब छात्र स्कूल छोड़ते हैं, तो शिक्षा मंत्रालयों को उन छात्रो की शिक्षा पर किए गए खर्च की वांछित वापसी का नुकसान होता है, जो स्कूल की ५ साख के बिना स्कूल छोड़ते हैं। जब बड़ी संख्या में छात्र स्कूल छोड़ते हैं, तो उनका अपने समुदायों और समाज के सुख के लिए प्रमुख रूप से किया जाने वाला योगदान कम हो जाता है।

2. स्कूल छोड़ने वाले बच्चों से सहसंबंधित कारक

स्कूल छोड़ने वाले बच्चों के अभिलक्षणों का परीक्षण करते हुए यह उपयोगी होगा कि अमेरिका मेंबच्चों और युवाओं पर व्यापक कार्यों का अध्ययन हो क्योंकि अनुसंधान संपूर्ण एवं गहन है और अनेकोंस्थितियों में अनुसंधान रुपरेखा और विश्लेषण के लिए कठोर मानकों को पूरा करते हैं। यह ध्यान देने कीआवश्यकता है कि अमेरिका में अत्यधिक स्कूल छोड़ने वाले छात्रों की संख्या माध्यमिक स्कूलों में अधिक हैक्योंकि इस देश के कानून के अनुसार कम से कम 16 वर्ष की उम्र तक सभी बच्चों को स्कूल में होनाचाहिए। इस देश में नियमित रूप से अनुपस्थित बच्चों का पता करने के लिए अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। यह जानकारी वैसे देशों के लिए महत्त्वपूर्ण हो सकती है, जहाँ स्कूल छोड़ने की समस्या बड़ेबच्चों पर केंद्रित होती है।

तालिका 1, भारतके साहित्यों के अनुसार बच्चों के स्कूल छोड़ने की महत्त्वपूर्णसंभावनाओं के कारकों का सारांश प्रस्तुत करती है। आमतौर पर, ये कारक स्कूल छोड़ने से संबंधित प्रत्येकअभिलक्षण की दिशा और गुणवत्ता को स्पष्ट करती है। विकसित और विकासशील देशों की लगभग सभीस्थितियों में कारकों और स्कूल छोड़ने के मध्य के नकारात्मक संबंध एकसमान होते हैं। एक अपवाद हैलिंगः अमेरिका और ओ.ई.सी. डी देशों में अक्सर लड़के छोड़ते हैं जबकि विकासशील देशों में लड़कियाँअधिकतर स्कूल छोड़ती हैं। इस तालिका के लिए विशेष अध्ययनों को परिशिष्ट में दिए गए चार्ट मेंसूचिबद्ध किया गया है ताकि यह पहचान करने में सहायता मिल सके कि प्रत्येक अध्ययन में संभावना कीकौन से कारकों की चर्चा की गई है। व्याख्या करने की सुविधा के लिए कारक के स्त्रोत के आधार पर चार्टपर दी गई संभावनाओं के कारकों को चार 'क्षेत्रों' में बाँटा गया है, व्यक्ति, परिवार, स्कूल और समुदाय।

प्रत्येक क्षेत्र में एक साथ प्रतीत होने वाले कारकों का समूहीकरण किया गया है।"व्यक्तिगत" क्षेत्र में पृष्ठभूमि संबंधी अभिलक्षण आते हैं, जैसे नामांकन के समय उनकी उम्र एवंलिंग, व्यस्क होने के पूर्व ही घर की और काम के उत्तरदायित्तव, सामाजिक सोच, महत्व एवं व्यवहार(अर्थात् एक छात्र किन मित्रों के साथ जुड़ा है और इनसे कैसे जुड़ा); स्कूल में प्रदर्शन(अर्थात् एक छात्रकितना सफल होता है) स्कूल की व्यस्तता (अर्थात् स्कूल जाने के लिए एक छात्र कितना उत्साहित रहता हैया प्रेरित होता है) और स्कूल में व्यवहार (अर्थात् अनुशासन संबंधी विषय)। "पारिवारिक" क्षेत्र में एकपरिवारिक इकाई की पृष्ठभूमि संबंधी अभिलक्षण आते हैं (जैसे निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर, माता–पिताका कम शिक्षित होना) और स्कूल के साथ परिवार के आबंध के मापदंड और अपने बच्चों को शिक्षित बनानेके विचार पर उनकी प्रतिबद्धता (जैसे स्कूल के साथ कम संपर्क स्कूल जाने को कम महत्त्व देना)। "स्कूल"क्षेत्र मे संरचना संबंधी मापदंड आते हैं (जैसे स्कूल का घर से बहुत दूर होना, पर्याप्त सुविधाओं की कमी)और कार्यात्मक मापदंड (जैसे शिक्षण की गुणवत्ता में कमी, पाठ्यक्रम की संबद्धता में कमी)। अंत में,"सामुदायिक" क्षेत्र में उस स्थान का विवरण शामिल है जहाँ से बच्चे

स्कूल में पढ़ने आते हैं (जैसे शहरी याग्रामीण, स्थिति का प्रतिकूल होना, आपातकाल या राजनीतिक रुप से दुर्बल राज्य)। दाहिनी ओर के दोकॉलम में बड़ी अक्षरों से लिखी बातें उन कारकों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनका उल्लेख एक तिहाई सेभी अधिक समीक्षा किए गए लेखनों द्वारा किया गया है।

तालिका 1: अध्यनों की संख्या (प्रतिशत) में प्रत्येक संभावित कारक के द्वारा स्कूल छोड़ने के लिएमहत्वपूर्ण योगदान

कारक	**विकासशील देश (N =26)**
व्यक्तिगत क्षेत्र	
व्यक्तिगत पृष्ठभूमि संबंधी अभिलक्षण	
• नामांकन के समय अधिक उम्र (वर्ग के हिसाब से अधिक उम्र)	5 (19%)
• लिंग	9 (35%)– महिला
• किसी प्रकार की निःशक्तता का होना/ बार–बार बीमार पड़ना	12 (46%)
शीघ्र व्यस्क उत्तरदायित्त्व	
• आर्थिक/अवसर लागत/रोज़गार	19 (73%)
• विवाह/ माता–पिता बनना	7 (27%)
समाजिक सोच, महत्व एवं व्यवहार	
• अधिक–संभावित सहभागी समूह/सामाजिक व्यवहार	--
• जो स्कूल छोड़ने वाले हैं उनके लिए आदर का भाव	3 (12%)
स्कूल में प्रदर्शन	
• निम्न उपलब्धि	9 (35%)
• एक ही वर्ग में रुके रहना/उस वर्ग के हिसाब से अधिक उम्र का होना	10 (38%)
स्कूल में व्यस्तता	
• कम उपस्थिति	8 (31%)
• निम्न शैक्षणिक अपेक्षाए	--
• स्कूल के प्रति कम प्रतिबद्धता/रुचि में कमी	10 (38%)
स्कूल में व्यवहार	
• गलत व्यवहार/अपराध प्रवृत्ति	2 (8%)
पारिवारिक क्षेत्र	

पारिवारिक पृष्ठभूमि संब ंधी अभिलक्षण	
• कमज़ोर / निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर	19 (73%)
• सांस्कृतिक / जातीय / भाषा संबंधी अल्पस ंख्यक	7 (27%)
• माता–पिता का कम शैक्षणिक स्तर	12 (46%)
• वास्तविक माता–पिता के साथ नहीं रह रहे हैं	7 (27%)
• माता–पिता बेरोजगार	4 (15%)
• भाई–बहनों की अधिक संख्या, विशेषकर कर 5 वर्ष से कम उम्र के	5 (19%)
• पारिवारिक विघटन (जैसे, तलाक, मृत्यु)	5 (19%)
• परिवार की उच्च गतिशीलता	7 (27%)
पारिवारिक व्यस्तता / शिक्षा के लिए प्रतिबद्धता	
• भाई–बहन ने स्कूल छोड़ा हैं	--
• स्कूल से कम संपक्र होना	2 (8%)
• स्कूल जाने को कम महत्त्व देना	5 (19%)
स्कूल के क्षेत्र	
संरचना	
• अधिक नामांकन	--
• कम आय और अल्पसंख्यकों का अधिक पाया जाना	--
• बहुत अधिक दूर / बहुत कम स्कूल	11 (42%)
• सुविधाओं और आपूर्ति की कमी (जैसे, शौचालय)	4 (15%)
• प्राथमिकोत्तर स्कूलों की कमी	2 (8%)
कार्य	
• स्कूल की निम्न "गुणवत्ता"	6 (23%)
• असुरक्षित (जैसे गिरोह, शारीरिक दण्ड)	6 (23%)
• शिक्षण की निम्न गुणवत्ता / शिक्षकों की अधिक अनुपस्थिति	5 (19%)
• स्कूल में व्यस्क व्यक्तियों के साथ कम संपक्र	--
• निर्देशों की भाषा बच्चे की मातृ भाषा से भिन्न	3 (12%)
• निर्देशों की भाषा बच्चे की मातृ भाषा से भिन्न	3 (12%)
• पाठ्यक्रम की संबद्धता में कमी	--
• शिक्षण में निष्ठा की कमी	
समुदायिक क्षेत्र	
• शहरी / झुग्गी झोपड़ी	1 (4%)
• ग्रामीण	8 (31%)
• गरीबों, अल्पसंख्यक, विदेश में जन्म, एकल अभिभावक, कम शिक्षित माता–पिता की अधिक संख्या	1 (4%)

• प्रतिकूल स्थिति, आपातकाल, राजनीतिक रुप से दुर्बल	4 (15%)
• सांस्कृतिक धारणायें/पारित होने के संस्कार जो स्कूल जाने से रोकते हैं	2 (8%)

दो प्रमुख कारक जो 73 प्रतिशत अध्ययनों मेंसही साबित हुए हैं, वे अर्थशास्त्र संबंधी परिवर्ती हैं। इनमें पहला परिवार की गरीबी है जो पारिवारिक क्षेत्रसे संबंधित है और दूसरा व्यक्तिगत क्षेत्र से संबंधित है अर्थात् बच्चे के द्वारा पैसे कमाने की या घर के अन्यकार्य करने की आवश्यकता। विशेष रुप से केवल विकासशील देशों में ही आर्थिक चिन्तायें महत्त्वपूर्ण होतीहैं। बच्चों के स्कूल में उपस्थित रह पाने के मार्ग में कुछ सच्चाइयों का सामना करना पड़ता है औरइसलिए हस्तक्षेप की रुपरेखा तैयार करने वाले इसे अर्थपूर्ण मानते हैं कि उन्हे सीधे तरीके से आर्थिकआवश्यकताओं संबंधी विषय को संबोधित करना चाहिए। आर्थिक चिंता के बाद थोड़ा आगे आने पर अनेकोंदूसरी बातें है जिनका अनुपातिक रुप से बार–बार उल्लेख किया गया है। विकसित देशों की तरह हीविकासशील देशों में भी वैसे बच्चे जिनके स्कूल छोड़ने की अधिक संभावना होती है, वे स्कूल में कमउपलब्धि का प्रदर्शन करते हैं, उन्हे एक ही वर्ग में रोक दिया जाता है या वे उस वर्ग के हिसाब से अधिकउम्र के होते हैं, वे स्कूल के प्रति कम प्रतिबद्धता या रुचि दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त विकासशील देशों मेंस्कूल छोड़ने वाले छात्रों की श्रेणी में लड़कियाँ आती हैं, या वैसे बच्चे जिन्हें किसी प्रकार की निःशक्तताहोती है या जो बार–बार बीमार पड़ते हैं, जिनके माता–पिता बहुत कम शिक्षित हैं और वे छात्र जोअनुपातिक रुप से बहुत दूर के घरों से स्कूल आते हैं। यह नोट किया जाना चाहिए कि विकासशील देशोंमें स्कूल छोड़ने वाले छात्रों से संबंधित साहित्य उन व्यवहारिक समस्याओं का उल्लेख नहीं करते हैं, जोअमेरिका एवं ओ.ई.सी.डी के स्कूल छोड़ने की संभावना पर पाए जाने वाले छात्रों में देखी जाती है5।

विश्व के प्रत्येक भागों में पाए जाने वाले साहित्यों में इस बात पर आम सहमती है कि स्कूल छोड़नाएक एकल घटना होने की अपेक्षा एक प्रक्रिया होती है। एक ऐसी प्रक्रिया जिसकी शुरुआत स्कूल केप्राथमिक वर्ष के आरंभ से होती है लेकिन इसके बाद के परिणाम स्कूल लौटने में असफलता संबंधी नहींहोती (हंट, 2008)। अमेरिका में नैशनल ड्रॉपआउट प्रीवेन्शन सेन्टर (हाम्मोन्ड 2007) ने वैसे कारकों कीपहचान की है, जो प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च स्कूल के बच्चों में दिखने लगते हैं। इनकी खोज कोतालिका–3 में प्रस्तुत किया गया है। एक विशेष उम्र के समूह के लिए दिखाए गए खाली खाने का अर्थ हैकि किसी भी अध्ययन में इस कारक को सांख्यिकी रुप से महत्त्वपूर्ण नहीं माना गया है, 1 का अर्थ है किएक अध्ययन में इस कारक को महत्त्वपूर्ण माना गया है और **श'श** का अर्थ है कि कम से कम दो अध्ययनोंमें कारक को महत्त्वपूर्ण माना गया है।

इस तालिका से यह देखा जा सकता है कि स्कूल छोड़ने के कारण भिन्न वर्गों के छात्रों के लिएभिन्न होते हैं। कम–से–कम दो अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि प्राथमिक स्कूल के बच्चे जो कम उपलब्धिप्राप्त करते हैं, उन्हे एक ही वर्ग में रोक दिया जाता है या वे अपने वर्ग के हिसाब से अधिक उम्र के होतेहैं, अनुपातिक रुप से उनकी अनुपस्थिति की दर अधिक होती है और ये गरीब परिवारों से आते हैं। इनसभी के स्कूल छोड़ने की अधिक संभावनाएँ होती हैं परंतु अन्य अभिलक्षण जैसे अपने समकक्षों का प्रभाव याशिक्षा के प्रति परिवार की प्रतिबद्धता अभी तक शामिल नहीं हैं। शीघ्र व्यस्क उत्तरदायित्त्व, अपने समकक्षोंका प्रभाव और शिक्षा के प्रति बच्चे एवं परिवार की व्यस्तता, बच्चे की उम्र से संबद्ध होते हैं। तो, हस्तक्षेपकी रुपरेखा बनाने वालों के लिए छात्रों की उम्र से संबंधित संभावनाओं के कारकों को संबोधित करने कीआवश्यकता हो जाती है।

3. निष्कर्ष

पिछले दशक में सब बच्चों की शिक्षा तक पहुँच बढाने में प्रभावशाली बढत पाने के बावजूद बच्चोंका स्कूल छोडने का विस्तार सोच का विषय है। यद्यपि समस्या का आकार क्षेत्रों व देशों के भीतर अलगअलग है, हाल ही के शैक्षणिक विवरण प्रमाणित करते हैं कि स्कूल में प्रवेश करने वाले बच्चों का महत्वपूर्णप्रतिशत प्राथमिक शिक्षा भी पूरी नहीं करता। यह अपूर्णता व्यक्तिगत रूप से बच्चों के लिये तथा शिक्षा प्रणाली व समाज के लिये संसाधनों की महत्वपूर्ण बरबादी है। यद्यपि बच्चों को स्कूल छोडने से रोकने हेतुनिवेश के मूल्य के प्रति आम सहमति है, तथापि ये निवेश किस प्रकार के हों इसपर सहमति कम है।

बच्चों के स्कूल छोडने के कारण जटिल हैं। आखिरकार, कोई एक संभावित तत्व नहीं है जो स्कूलछोडने संबंधी सटीक पूर्व सूचना दे सके या उसे रोक सके। वास्तव में शोध यह स्पष्ट दिखाता है कि स्कूलछोडना कई संभावित तत्वों (यथा, लिंग, कार्य दायित्व, कम उपलब्धि, पारिवारिक निर्धनता, परिवार के स्कूलसे संपर्क में कमी, स्कूल से दूर निवास) तथा विभिन्न प्रभाव क्षेत्रों (व्यक्ति, परिवार, स्कूल तथा समुदाय) केसंयोजन से होता है। फलस्वरूप कोई विशिष्ट घटना बच्चों के स्कूल छोडने में उत्प्रेरक का कार्य करसकती है (यथा, परिवार के सदस्य की मृत्यु से आमदनी रुकने का सदमा)। स्कूल छोड़ना साधारणतया लंबेसमय में होने वाली एक सामान्य प्रक्रिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- अंपिया जे. तथा अडू–येबो सी. (2009). मैपिंग द इंसिडेंस ऑफ स्कूल ड्रॉपआउट्सः अ केस स्टडी ऑफ कम्यूनिटीज इन नदर्न घाना। कंपरेटिव एजुकेशन, 45(2), 219–232.
- बेर्ड एस., मैकिंटोश सी. तथा ओज्लर बी. (2009). डिजाइनिंग कॉस्ट–इफेक्टिव कैश ट्रांस्फर प्रोग्राम्स टु बूस्ट स्कूलिंग एमंग यंग वूमन इन सब–सहारन एफ्रीका। वर्ल्ड बैंक पॉलिसी रिसर्च वर्किंग पेपर 5090.
- बलफांज आर., फॉक्स जे., ब्रिजलैंड जे. तथा मैकनौट एम (2008). ग्रैड नेशनः ए गाइडबुक टु हेल्प कम्यूनिटीज टैकल द ड्रॉपआउट क्राइसिस। बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के समर्थन से बना। अमेरिका के प्रॉमिस एलाइएंस द्वारा कमीशन किया गया।
- बनर्जी ए., कोल एस., डूफ्लो इ. तथा लिंडेन एल (2007). रेमेडिंग एजुकेशनः इविडेंस फ्रॉम टू रैंडमाइज्ड एक्सपेरिमेंट्स इन इंडिया। क्वार्टरली जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, 122(3), 1235–1264.
- सी.ए.आर.इ. इंटरनेशनल तिमोर लेस्त (2010). यंग वूमन्स एजूकेशन इन अ यंग नेशनः बेसलाइन सर्वे रिपोर्ट। लेखक।
- चटर्जी एम., हचिन्सन पी., बक के., मुरे एन., मुलेंगा वाई. तथा वेंटीमिग्लिया टी. (2010). इवैलुएटिंग द इंपैक्ट ऑफ कम्यूनिटी–बेस्ड इंटरवेंसन्स ऑन स्कूलिंग आउटकम्स अमंग ऑर्फन्स एंड वल्नरेबुल चिल्ड्रेन इन लुसाका, जांबिया। वल्नरेबुल चिल्ड्रेन एंड यूथ स्टडीज, 5 (2), 130–141.
- दास पी. (2010). प्रोसेस ऑफ गर्ल्स ड्रॉपआउट इन स्कूल एजूकेशनः एनालिसिस ऑफ सेलेक्टेड केसेज इन इंडिया। इन इन्जेंडरिंग इम्पावरमेंटः एजुकेशन एंड इक्वालिटी इ–कॉनफेरेंस। 12 एप्रील–14 मे। युनाइटेड नेशन्स गर्ल्स एजूकेशन
- इनीशिएटिवः न्यू यॉर्क। यू आर एलःhttp://ww.e4conference.org/e4eसे उपलब्ध।

- गोविन्दा आर. तथा बंद्योपाध्याय एम. (2008). ऐक्सेस टु एलिमेंटरी एजुकेशन इन इंडियाः कंट्री एनालिटिकल रिविउ। यूनिवरसिटी ऑफ ससेक्सः (सी.आर.इ.ए.टी.इ. ब्न्ध्।ज्म्)।
- फ्रायडमैन डबलू., क्रेमर एम., मिग्वेल इ. तथा थॉर्नटन आर. (2011). एजुकेशन ऐज लिबरेशन? कैंब्रिज, एम.ए.: द अब्दुल लतीफ जमील पॉवर्टी ऐक्शन लैब।
- रेड्डी ए. तथा सिन्हा एस. (2010). स्कूल ड्रॉपआउट्स ऑर पुशआउट्स? ओवरकमिंग बैरियर्स फॉर द राइट टु एजुकेशन। सीआर. इ.ए.टी.इ. पाथवेज टु ऐक्सेस रिसर्च मोनोग्राफ नंबर 40.
- अहमद ए. तथा डेल निन्नो सी. (2002). द फुड फॉर एजुकेशन प्रोग्राम इन बंगलादेशः ऐन इवैलुएशन ऑफ इट्स इंपैक्ट औन एजुकेशनल ऐटेनमेंट एंड फुड सिक्योरिटी। इंटरनेशनल फुड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीच्यूट।